Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा- सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-6 'वृक्ष की गवाही') भाग-1

पुस्तक- नवतरंग भाग-7

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

यह पाठ-6 'वृक्ष की गवाही' आपकी पाठ्य पुस्तक नवतरंग-7 के पृष्ठ-45 पर दिया गया है। इस पाठ का कार्य आपको 5.8.24 को भेजा जा रहा है।

वृक्ष की गवाही नामक पाठ नाटक विधा के अंतर्गत लिखा गया है। यह संपूर्ण नाटक दो मित्रों मोहन और गोविंद पर आधारित है। इस पाठ में यह दिखाया गया है कि हम सबसे ज़्यादा जिस पर विश्वास करते हैं, वही हमें धोखा देता है, विश्वासघात करता है।

इस पाठ में दो मित्र हैं। एक का नाम मोहन है तो दूसरे का नाम गोविंद। दोनों में घनिष्ठ मित्रता थी। एक बार गोविंद के मन में तीर्थयात्रा पर जाने का विचार आया। यात्रा पर जाने से पहले वह अपने कुछ रुपए मोहन के पास धरोहर के रूप में रखना चाहता था। उसे डर था कि उसके जाने के बाद सूने घर में उसके रुपए कोई चुरा न ले। इसी बात को ध्यान में रखकर वह मोहन के पास गया और सारा वृतांत कह सुनाया। मोहन ने पूछा कि गोविंद तुम कितने रुपए रखोगे? कितने दिन की यात्रा है? सारी बात पूछने के बाद मोहन ने घर से बाहर पीपल के पेड़ के नीचे, एकांत में रुपए लेने के लिए गोविंद को बुलाया।

दूसरे दिन सुबह आठ बजे दोनों पीपल के पेड़ के नीचे पहुँच गए। गोविंद ने पैसे गिनकर एक हज़ार रुपए मोहन को दे दिए। जिस प्रकार हम और आप अपने सच्चे और पक्के मित्र पर भरोसा करते हैं, उसी प्रकार गोविंद भी अपने मित्र मोहन पर उतना ही भरोसा करता था। अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी।

प्रश्न-1. पाठ में आए दोनों मित्रों के नाम क्या थे?
उत्तर मोहन और गोविंद।

Scanned with CamScanner

Date 5.8.24
Page 2

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-6 'वृक्ष की गवाही')

प्रश्न-2 गोविंद कहाँ जाना चाहता था?
उत्तर- तीर्थयात्रा पर।
प्रश्न-3 मोहन ने रुपए लेने के लिए गोविंद को कहाँ बुलाया?
उत्तर- पीपल के पेड़ के नीचे।

अब पाठ को आगे बढ़ाते हुए पढ़ते हैं। गोविंद ने एक थैली में भरकर रुपए मोहन को दे दिए। मोहन थैली लेकर रसीद लिखने की बात कहता है। इस पर गोविंद, मित्र पर भरोसा करते हुए रसीद लेने से मना कर देता है। लेकिन मोहन के मन में बेईमानी और झूठा नाटक चल रहा था। उसने गोविंद को मीठी बातों में फँसाकर उसे रसीद नहीं दी। गोविंद ने उस पर विश्वास जताया। तब मोहन ने उसे यात्रा की शुभकामनाएँ और कभी-कभी पत्र डालने की बात कही। ऐसा कहकर दोनों ने अपनी-अपनी राह पकड़ी।

चार-पाँच महीने बाद गोविंद यात्रा से लौटकर आता है। वह, अपने रुपए जो अमानत के तौर पर मोहन के पास रखे थे, उन्हें लेने मोहन के पास पहुँचा। कुशल क्षेम पूछने के बाद गोविंद ने अपने रुपए मोहन से वापस माँगे। अनजान-सा बनकर मोहन ने गोविंद से पूछा, "कौन-से रुपए भाई? मैं कुछ समझा नहीं। गोविंद ने याद दिलाते हुए कहा, "वे एक हज़ार रुपए जो मैं जाते समय तुम्हें सौंप गया था।" मोहन रुपए रखने और गोविंद को वापस देने से मुकर गया। मोहन कहने लगा कि तुम रसीद या गवाह लाओ तो मैं तुम्हें रुपए देने को तैयार हूँ। गोविंद के पास कोई रसीद या गवाह था नहीं। वह बोला मैं नालिश (मुकदमा) कर दूँगा। मोहन जानता था कि न्यायाधीश सबूत माँगेंगे, जो गोविंद के पास नहीं हैं। अतः उसे धमकी देते हुए बोला, "जो करना है, कर लो।"

अब मैं आपसे कुछ प्रश्न पूछूँगी।

प्रश्न-1 गोविंद ने मोहन के पास कितने रुपए रखने को दिए थे?
उत्तर- एक हज़ार रुपए।

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

कक्षा - सातवीं सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-6 'वृक्ष की गवाही')

प्रश्न-2 "कौन- से रुपए भाई? मैं कुछ समझा नहीं! यह वाक्य किसने- किससे कहा?
उत्तर- मोहन ने गोविंद से कहे।
प्रश्न-3 गोविंद कहाँ जाने की बात करता है?
उत्तर- अदालत में।

बच्चो! आज हम इस पाठ को यहीं तक पढ़ेंगे। आशा है सब बच्चों ने प्रसन्न होकर इस पाठ को समझा होगा। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी।

गृहकार्य :-

सब बच्चे पृष्ठ -50 पर आए शब्दार्थ को अपनी हिंदी साहित्य की अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे। शेष भाग --- अगले हफ्ते पढ़ाया जाएगा।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)